ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

Volume 10, Issue 1, January 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

IMPACT FACTOR: 6.551

| www.ijarasem.com | ijarasem@gmail.com | +91-9940572462 |

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

रामकथा का महत्व

ADWAIT SHADILYA

DEPT. OF HINDI, DEEN DAYAL UPADHYAYA GORAKHPUR UNIVERSITY, GORAKHPUR, UTTAR PRADESH, INDIA

सार

आधुनिक काल में मनुष्य जीवन के चारों तरफ अंतः और बाह्य रूप में इस तरह की परिस्थितियां निर्मित हुई हैं कि यह समय एक तरह से मानसिक अशांति का समय घोषित हो गया है । जब मनुष्य मानसिक अशांति के दौर से गुजरता है तो वह अपने भीतर उत्पन्न अनेक परेशानियों से भी जूझने लगता है । सामाजिक जीवन -मूल्यों के पतन के इस दौर में चारों तरफ हिंसा और अशांति का एक शोर सा सुनाई देता है । यह हिंसा कहीं मानसिक रूप में बिल्कुल अमूर्त होकर मनुष्य को भीतर ही भीतर परेशान कर रही है तो कहीं मूर्त रूप में हमारी आंखों के सामने तांडव रच रही है । धार्मिक उन्माद , लूटपाट, हत्या ,बलात्कार ,आगजनी जैसी हिंसा से समाज जिस तरह जूझ रहा है वह जीवन-मूल्यों के खत्म हो जाने का संकेत है । आज मनुष्य जीवन में न कहीं त्याग की भावना नजर आती है न उदारता का कोई उदाहरण दिखता है। गुरु और बड़ों के प्रति सम्मान के भाव में जो गिरावट आई है उसे हम स्पष्ट रूप से घरों में और घर के बाहर भी महसूस करते हैं । मनुष्य-मनुष्य के बीच मैत्रीभाव का अभाव आज के समय को कंगाल बनाता है । उच्च और निम्न वर्ग के बीच आर्थिक , वर्गीय और जातिगत भेदभाव आज अधिक सघन हुआ है। दलित पीड़ित वर्ग को हेय की नजर से देखने का नजरिया पूंजीवादी व्यवस्था में अधिक सघन रूप में हमारे सामने विद्यमान है। ये सभी स्पष्ट संकेत देते हैं कि मनुष्य के जीवन में जिन बुनियादी मूल्यों की सर्वाधिक जरूरत है वही मूल्य उसके जीवन से एकदम से नदारद हो गए हैं । ये जीवन-मूल्य ही तो मनुष्य को मानवतावादी दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। अगर यही हमारे जीवन से गायब हो जाएं तो मनुष्य के भीतर मनुष्य होने के जो गुण होने चाहिए, उन गुणों से ही मनुष्य विलग हो जाता है और वह फिर मनुष्य ना होकर किसी राक्षस या शैतान में बदल जाता है । यह आधुनिक समय मनुष्य को किसी राक्षस या शैतान में बदल देने का संक्रमण कालीन समय है।

परिचय

यह आधुनिक समय उन विकल्पों पर भी विचार विमर्श करने का समय है जिनके माध्यम से मानवीय मूल्यों को मनुष्य जीवन में फिर से प्रतिस्थापित किया जा सके । अगर उन तमाम विकल्पों पर हम विचार विमर्श करते हैं तो रामकथा उन जीवन मूल्यों के पुनर प्रतिस्थापन का एक बेहतर विकल्प नजर आता है।

रामकथा और रामचरितमानस हमारे समाज में आस्था के प्रतीक माने गए हैं। यूं भी आस्था का सच्चा भाव मनुष्य को आत्म केंद्रित और शांतिप्रिय बनाता है ।[1] उसके मन मस्तिष्क में एकाग्रता उत्पन्न होती है । फलस्वरूप वह थोड़ा संयमित और मर्यादित भी होने लगता है । रामचरितमानस में निहित रामकथा के पठन-पाठन और श्रवण से आधुनिक समय में कोई परिवर्तन सघन रूप में भले ही मूर्तमान होता हुआ न प्रतीत होता हो पर इसका असर सामाजिक जीवन में अमूर्त रूप में अवश्य होता है । सोचिए कि कहीं पर अगर रामकथा का आयोजन हो रहा हो और वहां उसके श्रवण के लिए लोग जमा हुए हों तो उनमें किसी न किसी रूप में सामाजिक समरसता का भाव उत्पन्न तो होता ही है । लोग वहां जिस तरह शांति भाव से बैठते हैं और कथा श्रवण करते हैं वह दृश्य अपने आप में शांति का संदेश रचता है। कथा श्रवण के दौरान लोग आस्था के संचार से तनावमुक्त रहते हैं । तनावमुक्त व्यक्ति समाज के लिए उपयोगी हो सकता है। इस अर्थ में सोचें तो रामकथा का महत्व आधुनिक काल में बढ़ जाता है।[1]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

रामकथा में जीवन से जुड़ीं कुछ ऐसी घटनाएं और ऐसे प्रसंग आते हैं जो लोकजीवन को बहुत गहराई में जाकर प्रभावित करते हैं । रामकथा दरअसल समाज और लोकविमर्श का एक महाआख्यान है जो आधुनिक समय में सार्थक हस्तक्षेप करने का सामर्थ्य रखता है । इसके कुछ प्रसंगों को लेकर इस विमर्श को हम जान-समझ सकते हैं| निषादराज केवट और राम के प्रसंग पर हम आते हैं -

निषादराज केवट, रामायण का एक पात्र है। जिसने प्रभु श्रीराम को वनवास के दौरान माता सीता और लक्ष्मण के साथ अपने नाव में बिठा कर गंगा पार करवाया था। इसका वर्णन रामायण के अयोध्याकाण्ड में किया गया है।

गंगा नदी के किनारे रामचौरा घाट पर भगवान राम केवट को आवाज देते हैं - नाव किनारे ले आओ, पार जाना है।

मागी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना॥

चरन कमल रज कहुं सबु कहई। मानुष करनि मूरि कछु अहई॥

श्रीराम केवट से नाव मांगते हैं पर वह लाता नहीं है। वह कहता है - मैंने आपका मर्म जान लिया। आपके चरण कमलों की धूल के लिए सब लोग कहते हैं कि वह मनुष्य बना देने वाली कोई जड़ी है। वह कहता है कि पहले पांव धुलवाओ, फिर नाव पर चढ़ाऊंगा।[2,3]

अयोध्या के राजकुमार केवट जैसे सामान्यजन का मैत्रीभाव से निहोरा कर रहे हैं यह समाज व्यवस्था की अद्भुत घटना है जो आज के समय में कहीं दिखाई नहीं पड़ती | यह प्रसंग इस विमर्श को आज के समय में भी स्थापित करता है कि राजा का व्यवहार सामान्यजन के साथ किस तरह का होना चाहिए । रामकथा का यह प्रसंग आज की राजनीतिक व्यवस्था में वीआईपी कल्चर पर जबरदस्त आघात करते हुए आधुनिक राजाओं को अपने आचरण में सुधार का संदेश देता है ।

केवट चाहता है कि वह अयोध्या के राजकुमार को छुए। उनका सान्निध्य प्राप्त करे। उनके साथ नाव में बैठकर अपना खोया हुआ सामाजिक अधिकार प्राप्त करे। अपने संपूर्ण जीवन की मजूरी का फल पा जाए। राम वह सब करते हैं, जैसा केवट चाहता है। उसके श्रम को पूरा मान-सम्मान देते हैं। उसके स्थान को समाज में ऊंचा करते हैं। राम की संघर्ष और विजय यात्रा में उसके योगदान को बड़प्पन देते हैं। त्रेता के संपूर्ण समाज में केवट की प्रतिष्ठा करते हैं। केवट भोईवंश का था तथा मल्लाह का काम करता था। केवट प्रभु श्रीराम का अनन्य भक्त था। केवट राम राज्य का प्रथम नागरिक बन जाता है। राम त्रेता युग की संपूर्ण समाज व्यवस्था के केंद्र में हैं, इसे सिद्ध करने की जरूरत नहीं है। आज के राजनीतिक राजाओं को भी राम जैसा आदर्श स्थापित करने का संदेश इस प्रसंग में है जो आज अधिक महत्वपूर्ण है ।

अब हम रामकथा अंतर्गत अहिल्या प्रसंग के माध्यम से इस समाज विमर्श को समझने की कोशिश करेंगे ।अहल्या जो ब्रह्मा की मानस पुत्री थी और उसका विवाह गौतम ऋषि के साथ हुआ था । वह इंद्र द्वारा छली गई स्त्री थी । इंद्र ने गौतम ऋषि का वेश बदलकर अहिल्या से गलत संबंध बनाया, जिसकी जानकारी गौतम ऋषि को हो गई| इस प्रसंग में अहिल्या का कहीं भी कोई दोष नहीं है, सारा दोष इंद्र का है फिर भी गौतम ऋषि द्वारा वह श्रापित और परित्यक्त होकर एक पत्थर में तब्दील हो जाती है। आज भी समाज में हम ऐसी घटनाओं को रोज देख रहे हैं । जब किसी पुरुष द्वारा किसी महिला का बलात्कार होता है तो समाज की नजर में दोषी महिला ही होती है । वह चारों ओर से उत्पीड़न का शिकार होकर हाड़ मांस के पत्थर में बदल जाती है | राजतंत्र भी उसकी कोई ख़ास सहायता नहीं करता बल्कि कई बार वह दोषियों के पक्ष में आ खड़ा होता है | रामकथा में राम ने एक सताई हुई परित्यक्त स्त्री अहल्या का उद्धार कर समाज के इस गलत नजरिए पर हस्तक्षेप करके जो कड़ा संदेश दिया है वह आज अत्यंत प्रासंगिक है । इस नजरिए से भी आज रामकथा अधिक महत्वपूर्ण हो जाती

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

है।रामकथा के महत्व को सबरी प्रसंग के माध्यम से भी हम समझ सकते हैं । सबरी जो एक भीलनी स्त्री थी जन्म से ही उसके माता पिता की मृत्यु हो जाती है पर वह अपने भाग्य को कभी नहीं कोसती। अपनी काया से भी वह बहुत कुरूप होती है पर वह अपने ईष्ट राम को कभी दोष नहीं देती ।
वह जंगल में मतंग ऋषि की शिष्या थी । कहा जाता है कि पूर्वजन्म में वह एक राजकुमारी थी जिसकी शादी कर दी जा रही थी पर उसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य राम से ही मिलना था। इसलिए अपनी जगह एक दासी को बिठाकर वह जंगल की तरफ भाग गयी ।

इस जन्म में वह सबरी के रूप में जंगल में रही । गुरू मतंग ऋषि के प्रयाण के बाद वह उनकी कुटिया में अकेली रहने लगी थी । मतंग ऋषि ने उससे कहा था कि उसकी कुटिया में एक दिन राम जरूर आएंगे। जो भी पहला व्यक्ति आएगा वही राम होगा । गुरू के कथन को अकाट्य मान कर सबरी आजीवन राम की प्रतीक्षा में रही | ऐसा अगाध विश्वास आज कहीं देखने को नहीं मिलता | देखा जाए तो सबरी सब्र की प्रतिमूर्ति है । रामकथा का यह सन्देश है कि हर मनुष्य को ऐसा ही सब्र वाला और विश्वासी होना चाहिए ।

इस प्रसंग में अपनी युवावस्था से ही सबरी पूरे उत्साह के साथ राम की बाट जोहती रहती है।वह हर दिन घर को बुहारती है , रास्ते पर फूल सजाती है और जंगल से बेर तोड़कर लाती है कि वह अपने राम को खिला सके । इस इंतजार में उसकी पूरी उम्र बीत जाती है पर वह कभी नहीं थकती ना उसका उत्साह कभी कम होता है| फिर एक दिन राम उसकी कुटिया में आते हैं । बड़े उत्साह के साथ सबरी उन्हें जूठे बेर खिलाती है । आसक्ति जब गहरा प्रेम का रूप ले ले तो किसी भी चीज की प्राप्ति जीवन में संभव है चाहे वह राम ही क्यों न हों । रामकथा का यह प्रसंग यह संदेश देता है कि मनुष्य को कभी भी अपना धैर्य और सब्र नहीं खोना चाहिए| जिस तरह सबरी के जीवन का प्रत्येक दिवस राम की प्राप्ति की संभावना से भरा हुआ था उसी तरह मनुष्य को तमाम असफलताओं के बावजूद हर दिन को उत्साह के साथ एक संभावना के रूप में देखना चाहिए , यह जरूरी संदेश रामकथा से ही हमें मिलता है ।

राम के वनवास वाले प्रसंग को भी आज राजनीतिक विमर्श से जोड़कर देखे जाने की जरूरत है । राम गृह त्याग कर अगर वन गमन नहीं करते और एक साधारण मनुष्य का जीवन नहीं जीते तो उन्हें आमजन की पीड़ा का कभी भी अनुभव नहीं होता। वनवास के दौरान उन्होंने अहिल्या सहित सुग्रीव, निषादराज, जटायु जैसे पीड़ितों और आमजन का उद्धार किया और सम्मान पूर्वक जीने का हक दिया ।राम जो कि सम्पूर्ण कथा के केंद्रीय पात्र हैं वे प्रजा के तारणहार हैं ।[4,5] उनके चरित्र में कहीं भी विचलन नजर नहीं आता । वे हर जगह मर्यादित, संयमित, धैर्यवान, त्यागी और बड़ों के प्रति आज्ञाकारिता का भाव लिए नजर आते हैं। उनके भीतर कहीं भी क्रोध का भाव नहीं है। वे एक जगह समुद्र पर जरूर क्रोधित होते हैं क्योंकि क्रोधित होना वहां जरूरी नजर आता है । यहां भी वे सचमुच में क्रोधित नहीं होते बल्कि क्रोधित होने का प्रदर्शन करते हैं । राजा को आज ऐसा ही होना चाहिए | कभी कभी उसे आमजनों जैसा जीवन जीते हुए लोगों के मध्य जाना चाहिए, तभी लोगों का दुखदर्द वह समझ सकता है | रामकथा का यह प्रसंग आज के आधुनिक राजाओं को भी ऐसा होने का संदेश देता है और इस अर्थ में आधुनिक समय में इसका महत्व और प्रासंगिकता बढ़ जाती है ।

रामकथा में इस तरह के अनेकानेक प्रसंग हैं जिनके माध्यम से आधुनिक समय में सामाजिक विमर्श का एक नया अध्याय खुलता है । सामाजिक विमर्श के माध्यम से ही अच्छाइयों की स्थापना और बुराइयों का विस्थापन संभव है| इन सारे प्रसंगों में निहित अर्थों की व्यापकता के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आधुनिक समय में रामकथा के महत्व की स्वीकार्यता अपने आप बढ़ जाती है |[1,2]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

विचार-विमर्श

रामकथा के जरिए मनुष्य का जीवन संवर जाता है। वह बुरे कर्म छोड़कर नेकी की राह पर चल पड़ता है। सत्संग से मानव अपने साथ-साथ परिवार एवं समाज का भी कल्याण करने लगता है। संत की कृपा से सत्संग मिलती है और जब संत विशेष कृपा करता है तो समागम मिल जाता है। वह मनुष्य की स्वाभाविक आत्मा है और मनुष्य के आवरण से ढकी हुई है। इस कारण वह अज्ञात है। आवरण से उसका चैतन्य ढका हुआ है, लेकिन वह अस्त नहीं है। उन्होंने कहा कि संतों की कृपा से ही समागम मिलता है। रामकथा के जरिए मनुष्य का जीवन संवर जाता है। वह बुरे कर्म छोड़कर नेकी की राह पर चल पड़ता है। सत्संग से जुड़ने के बाद मानव अपने साथ-साथ परिवार एवं समाज का भी कल्याण करने लगता है। संत की कृपा से सत्संग मिलता है और जब संत विशेष कृपा करता है तो समागम मिल जाता है। रामकथा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि अकेले प्रार्थना करने से हो सकता है कि परमात्मा कुछ देर में सुने, लेकिन जब एक साथ लाखों हाथ जुड़कर प्रार्थना करते हैं तो परमात्मा को सुनना ही पड़ता है। इसलिए रामकथा विशेष महत्व रखती है। सत्य का महत्व तब ही है जबकि सत्य को जीवन में मन, वचन, कर्म से स्वीकार किया जाए। सत्य का आचरण करने वाला व्यक्ति ही सामाजिक जीवन में प्रतिष्ठा एवं सम्मान प्राप्त करता है। सत्य के आचरण के आधार पर ही हम एक-दूसरे पर विश्वास करते हैं। परस्पर विश्वास की नींव पर ही संपूर्ण समाज की रचना टिकी हुई है।

आदिकवि वाल्मीकि कृत रामायण न केवल इस अर्थ में अद्वितीय है कि यह देश-विदेश की अनेक भाषाओं के साहित्य की विभिन्न विधाओं में विरचित तीन सौ से भी अधिक मौलिक रचनाओं का उपजीव्य है, प्रत्युत इस संदर्भ में भी कि इसने भारत के अतिरिक्त अनेक देशों के नाट्य, संगीत, मूर्ति तथा चित्र कलाओं को प्रभावित किया है और कि भारतीय इतिहास के प्राचीन स्रोतों में इसके मूल को तलाशने के सारे प्रयासों की विफलता के बावजूद यह होमर कृत 'इलियाड' तथा 'ओडिसी', वर्जिल कृत 'आइनाइड' और दांते कृत 'डिवाइन कॉमेडी' की तरह संसार का एक श्रेष्ठ महाकाव्य है।[6,7]

'रामायण' का विश्लेषित रुप 'राम का अयन' है जिसका अर्थ है 'राम का यात्रा पथ', क्योंकि अयन यात्रापथवाची है। इसकी अर्थवत्ता इस तथ्य में भी अंतर्निहित है कि यह मूलत: राम की दो विजय यात्राओं पर आधारित है जिसमें प्रथम यात्रा यदि प्रेम-संयोग, हास-परिहास तथा आनंद-उल्लास से परिपूर्ण है, तो दूसरी क्लेश, क्लांति, वियोग, व्याकुलता, विवशता और वेदना से आवृत्त। विश्व के अधिकतर विद्वान दूसरी यात्रा को ही रामकथा का मूल आधार मानते हैं। एक श्लोकी रामायण में राम वन गमन से रावण वध तक की कथा ही रुपायित हुई है।

अदौ राम तपोवनादि गमनं हत्वा मृगं कांचनम्।

वैदेही हरणं जटायु मरणं सुग्रीव संभाषणम्।

वालि निग्रहणं समुद्र तरणं लंका पुरी दास्हम्।

पाश्चाद् रावण कुंभकर्ण हननं तद्धि रामायणम्।

जीवन के त्रासद यथार्थ को रुपायित करने वाली राम कथा में सीता का अपहरण और उनकी खोज अत्यधिक रोमांचक है। रामकथा की विदेश-यात्रा के संदर्भ में सीता की खोज-यात्रा का विशेष महत्व है। वाल्मीकि रामायण के किष्किंधा कांड के चालीस से तेतालीस अध्यायों के बीच इसका विस्तृत वर्ण हुआ है जो 'दिग्वर्णन' के नाम से विख्यात है। इसके अंतर्गत वानर राज बालि ने विभिन्न दिशाओं में जाने वाले दूतों को अलग-अलग दिशा निर्देश दिया जिससे एशिया के समकालीन भूगोल की जानकारी मिलती है। इस दिशा में कई महत्वपूर्ण शोध हुए है जिससे वाल्मीकी द्वारा वर्णित स्थानों को विश्व के आधुनिक मानचित्र पर पहचानने का प्रयत्न किया गया है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

कपिराज सुग्रीव ने पूर्व दिशा में जाने वाले दूतों के सात राज्यों से सुशोभित यवद्वीप (जावा), सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा) तथा रुप्यक द्वीप में यत्नपूर्वक जनकसुता को तलाशने का आदेश दिया था। इसी क्रम में यह भी कहा गया था कि यव द्वीप के आगे शिशिर नामक पर्वत है जिसका शिखर स्वर्ग को स्पर्श करता है और जिसके ऊपर देवता तथा दानव निवास करते हैं।

यनिवन्तों यव द्वीपं सप्तराज्योपशोभितम्।

सुवर्ण रुप्यक द्वीपं सुवर्णाकर मंडितम्।

जवद्वीप अतिक्रम्य शिशिरो नाम पर्वत:।

दिवं स्पृशति श्रृंगं देवदानव सेवित:।१

दक्षिण-पूर्व एशिया के इतिहास का आरंभ इसी दस्तावेती सबूत से होता है। इंडोनेशिया के बोर्नियो द्वीप में तीसरी शताब्दी को उत्तरार्ध से ही भारतीय संस्कृति की विद्यमानता के पुख्ता सबूत मिलते हैं। बोर्नियों द्वीप के एक संस्कृत शिलालेख में मूलवर्मा की प्रशस्ति उत्कीर्ण है जो इस प्रकार है-

श्रीमत: श्री नरेन्द्रस्य कुंडगस्य महात्मन:।

पुत्रोश्ववर्मा विख्यात: वंशकर्ता यथांशुमान्।।

तस्य पुत्रा महात्मान: तपोबलदमान्वित:।

तेषांत्रयानाम्प्रवर: तपोबलदमान्वित:।।

श्री मूलवम्र्मा राजन्द्रोयष्ट्वा वहुसुवर्णकम्।

तस्य यज्ञस्य यूपोयं द्विजेन्द्रस्सम्प्रकल्पित:।।२

इस शिला लेख में मूल वर्मा के पिता अश्ववर्मा तथा पितामह कुंडग का उल्लेख है। बोर्नियों में भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा के स्थापित होने में भी काफी समय लगा होगा। तात्पर्य यह कि भारतवासी मूल वर्मा के राजत्वकाल से बहुत पहले उस क्षेत्र में पहुँच गये थे।

जावा द्वीप और उसके निकटवर्ती क्षेत्र के वर्णन के बाद द्रुतगामी शोणनद तथा काले मेघ के समान दिलाई दिखाई देने वाले समुद्र का उल्लेख हुआ है जिसमें भारी गर्जना होती रहती है। इसी समुद्र के तट पर गरुड़ की निवास भूमि शल्मलीक द्वीप है जहाँ भयंकर मानदेह नामक राक्षस रहते हैं जो सुरा समुद्र के मध्यवर्ती शैल शिखरों पर लटके रहते है। सुरा समुद्र के आगे घृत और दधि के समुद्र हैं। फिर, श्वेत आभावाले क्षीर समुद्र के दर्शन होते हैं। उस समुद्र के मध्य ऋषभ नामक श्वेत पर्वत है जिसके ऊपर सुदर्शन नामक सरोवर है। क्षीर समुद्र के बाद स्वादिष्ट जलवाला एक भयावह समुद्र है जिसके बीच एक विशाल घोड़े का मुख है जिससे आग निकलती रहती है।३

'महाभारत' में एक कथा है कि भृगुवंशी और्व ऋषि के क्रोध से जो अग्नि ज्वाला उत्पन्न हुई, उससे संसार के विनाश की संभावना थी। ऐसी स्थिति में उन्होंने उस अग्नि को समुद्र में डाल दिया। सागर में जहाँ वह अग्नि विसर्जित हुई, घोड़े की मुखाकृति (वड़वामुख) बन गयी और उससे लपटें निकलने लगीं। इसी कारण उसका नाम वड़वानल पड़ा। आधुनिक समीक्षकों की मान्यता है कि इससे प्रशांत महासागर क्षेत्र की किसी ज्वालामुखी का संकेत मिलता है। वह स्थल मलस्क्का से फिलिप्पींस जाने वाले जलमार्ग के बीच हो सकता है।४ यथार्थ यह है

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

कि इंडोनेशिया से फिलिप्पींस द्वीप समूहों के बीच अक्सर ज्वालामुखी के विस्फोट होते रहते हैं जिसके अनेक ऐतिहासिक प्रमाण हैं। दधि, धृत और सुरा समुद्र का संबंध श्वेत आभा वाले क्षीर सागर की तरह जल के रंगों के संकेतक प्रतीत होते हैं।[8,9]

बड़वामुख से तेरह योजना उत्तर जातरुप नामक सोने का पहाड़ है जहाँ पृथ्वी को धारण करने वाले शेष नाग बैठे दिखाई पड़ते हैं। उस पर्वत के ऊपर ताड़ के चिन्हों वाला सुवर्ण ध्वज फहराता रहता है। यही ताल ध्वज पूर्व दिशा की सीमा है। उसके बाद सुवर्णमय उदय पर्वत है जिसके शिखर का नाम सौमनस है। सूर्य उत्तर से घूमकर जम्बू द्वीप की परिक्रमा करते हुए जब सैमनस पर स्थित होते हैं, तब इस क्षेत्र में स्पष्टता से उनके दर्शन होते हैं। सौमनस सूर्य के समान प्रकाशमान दृष्टिगत होते हैं। उस पर्वत के आगे का क्षेत्र अज्ञात है।५

जातरुप का अर्थ सोना होता है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि जातरुप पर्वत का संबंध प्रशांत महासागर के पार मैक्सिको के स्वर्ण-उत्पादक पर्वतों से हो सकता है। मक्षिका का अर्थ सोना होता है। मैक्सिको शब्द मक्षिका से ही विकसित माना गया है। यह भी संभव है कि मैक्सिको की उत्पत्ति सोने के खान में काम करने वाली आदिम जाति मैक्सिका से हुई है।६ मैक्सिको में एशियाई संस्कृति के प्राचीन

अवशेष मिलने से इस अवधारणा से पुष्टि होती है।[1,2,3]

बालखिल्य ऋषियों का उल्लेख विष्णु-पुराण और रघुवंश में हुआ है जहाँ उनकी संख्या साठ हज़ार और आकृति अँगूठे से भी छोटी बतायी गयी है। कहा गया है कि वे सभी सूर्य के रथ के घोड़े हैं। इससे अनुमान किया जाता है कि यहाँ सूर्य की असंख्य किरणों का ही मानवीकरण हुआ है।७ उदय पर्वत का सौमनस नामक सुवर्णमय शिखर और प्रकाशपुंज के रुप में बालखिल्य ऋषियों के वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है कि इस स्थल पर प्रशांत महासागर में सूर्योदय के भव्य दृश्य का ही भावमय एवं अतिरंजित चित्रण हुआ है।

वाल्मीकि रामायण में पूर्व दिशा में जाने वाले दूतों के दिशा निर्देशन की तरह दक्षिण, पश्चिम और उत्तर दिशा में जाने वाले दूतों को भी मार्ग का निर्देश दिया गया है। इसी क्रम में उत्तर में ध्रुव प्रदेश, दक्षिण में लंका के दक्षिण के हिंद महासागरीय क्षेत्र और पश्चिम में अटलांटिक तक की भू-आकृतियों का काव्यमय चित्रण हुआ है जिससे समकालीन एशिया महादेश के भूगोल की जानकारी मिलती है। इस संदर्भ में उत्तर-ध्रुव प्रदेश का एक मनोरंजक चित्र उल्लेखनीय है।

बैखानस सरोवर के आगे न तो सूर्य तथा न चंद्रमा दिखाई पड़ते हैं और न नक्षत्र तथा मेघमाला ही। उस प्रदेश के बाद शैलोदा नामक नदी है जिसके तट पर वंशी की ध्वनि करने वाले कीचक नामक बाँस मिलते हैं। उन्हीं बाँसों का बेरा बनाकर लोग शैलोदा को पारकर उत्तर-कुरु जाते है जहाँ सिद्ध पुरुष निवास करते हैं। उत्तर-कुरु के बाद समुद्र है जिसके मध्य भाग में सोमगिरि का सुवर्गमय शिखर दिखाई पड़ता है। वह क्षेत्र सूर्य से रहित है, फिर भी वह सोमगिरि के प्रभा से सदा प्रभावित होता रहता है।८ ऐसा मालूम पड़ता है कि यहाँ उत्तरीध्रुव प्रदेश का वर्णन हुआ है जहाँ छह महीनों तक सूर्य दिखाई नहीं पड़ता और छह महीनों तक क्षितिज के छोड़पर उसके दर्शन भी होते हैं, तो वह अल्पकाल के बाद ही आँखों से ओझल हो जाता है। ऐसी स्थिति में सूर्य की प्रभा से उद्भासित सोमगिरि के हिमशिखर निश्चय ही सुवर्णमय दीखते होंगे। अंतत: यह भी यथार्थ है कि सूर्य से रहित होने पर भी उत्तर-ध्रुव पूरी तरह अंधकारमय नहीं है।[3,4,5]

सतु देशो विसूर्योऽपि तस्य मासा प्रकाशते।

सूर्य लक्ष्याभिविज्ञेयस्तपतेव विवास्वता।९

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

राम कथा की विदेश-यात्रा के संदर्भ में वाल्मीकि रामायण का दिग्वर्णन इस अर्थ में प्रासंगिक है कि कालांतर में यह कथा उन स्थलों पर पहुँच ही नहीं गयी, बल्कि फलती-फूलती भी रही। बर्मा, थाईलैंड, कंपूचिया, लाओस, वियतनाम, मलयेशिया, इंडोनेशिया, फिलिपींस, तिब्बत, चीन, जापान, मंगोलिया, तुर्किस्तान, श्रीलंका और नेपाल की प्राचीन भाषाओं में राम कथा पर आधारित बहुत सारी साहित्यिक कृतियाँ है। अनेक देशों में यह कथा शिलाचित्रों की विशाल श्रृखलाओं में मौजूद हैं। इनके शिलालेखी प्रमाण भी मिलते है। अनेक देशों में प्राचीन काल से ही रामलीला का प्रचलन है। कुछ देशों में रामायण के घटना स्थलों का स्थानीकरण भी हुआ है।

परिणाम

रामकथा श्रीराम की कहानी है जो आज से हजारों साल पहले त्रेता युग में भगवान विष्णु के अवतार के रूप में प्रकट हुआ है। संस्कृत भाषा में आदि कवि बाल्मीकि ने इसे मूल रूप से लिखा है। यह कथा ना केवल भारतीय भाषा में अपितु विश्व के हर प्रमुख भाषाओं में लिखा गया है। विश्व साहित्य में रामकथा एक महाकाव्य तथा इतिहास के रूप में अपना विशिष्ट स्थान रखता हैं

यद्यपि त्रेता युग मे भगवान विष्णु के अवतार को श्रीराम ने अपने को मर्यादा पुरूषोत्तम के रूप में आदर्श मानव का साकार स्वरूप प्रस्तुत किया है। जो असंभव से असंभव परिस्थिति में मानव जीवन को उच्च स्तर पर पहुंचाने में सक्षम प्रमाणित हुआ है। इस परिप्रेक्ष्य में वह एक आदर्श पुत्र, शिष्य,पति,नेता, मित्र, राजनयिक, योद्धा और राजा के रूप में स्वयं को प्रस्तुत ही नहीं सिद्ध करके दिखाये हैं। एक शत्रु के रूप में भी उनमें आदर्श एवं दयालु भाव ही दिखाई देता है। युद्ध में उनका विरोध करने वाले सारे राक्षसों की आत्माओं को मुक्त कराने के लिए उन्होने पूर्ण तथा सफल प्रयास किया है। वे इतना विनम्र हैं कि अपनी विजय का श्रेय स्वयं न लेकर अपनी सेना को देते हैं। सम्पूर्ण रामकथा में, कुछ अपवादों को छोड़कर, श्रीराम जी अपने असली दिव्य स्वरूप को प्रकट होने नहीं देते हैं। जिससे उनके परम ब्रह्म के सर्वव्यापी व शक्तिशाली रूप का लोगों को आभास भी नहीं हो पाया है। वह यह भी सन्देश देने में सफल रहते हैं कि जन्मभूमि स्वर्ग से भी अधिक महत्वपूर्ण होती है – ''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपिगरीयशी''। इसके लिए वह भारतमाता के एक बेटे के रूपमें बलिदान देने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं तथा अपने को बलिदान देने पर गौरवान्वित महशूस होने की बात कहते हैं।

कुछ विद्वानों ने एक दार्शनिक रूपक का सुझाव देते हुए कहा है कि राम और सीता क्रमशः पुरूष और प्रकृति का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। मारीच को माया से समता करते हुए स्वर्ण मृग का रूप धारण करना पड़ा था। रावण के अशोक वाटिका में कैद सीता भ्रमित मानव की आत्मा के समान है। राम की खोज तथा प्रतीक्षा करना दिव्य आत्मा की खोज व प्रतीक्षा है। सीता कीं अिग्न परीक्षा प्रकति द्वारा माया को मानने की बृति का मोचन या विनाश करना है। अंततः पुरूष और प्रकृति को उनके मूल स्वरूप में प्रतिस्थापित किया गया है।[5,6,7]

इस कहानी को स्वामी विवेकानन्द जी ने भी एक आध्यात्मिक आयाम देने का प्रयास किया है। उन्होंने कहा है- राम परमात्मन् और सीता जीवात्मन् स्वरूप हैं। मानव शरीर लंका के समान है। जीवात्मन् सीता के रूप में शरीर धर कर लंका में कैद कर लिया गया है। वह हमेशा परमात्मन् या श्रीराम से मिलने के लिए लालायित रहती है। लेकिन राक्षस कुछ निश्चित अलग आचरण रखते हुए इस आत्मन् एवं परमात्मन् के मिलन की अनुमति नहीं प्रदान करते हैं। इतना ही नहीं लंका के जन्में तीनो ब्रह्मण भाईगण भी तीन गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। विभीषण सत्व गुण, रावण रजोगुण तथा कुम्भकरण तमो गुण के प्रतीक हैं। तमस – अंधकार,व्यामोह, लोभ, अस्वस्थता आदि का प्रतिनिधित्व करता है। ये तमस गुण के अवयव जीवात्मन् या सीता को अंधकारपूर्ण – शरीररूपी लंका में पीछे की तरफ मोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। जीवात्मन् सीता कैद में रह रही है। उसे हनुमान रूपी गुरू से परमात्मन् के ज्ञान की अंगूठी पहुचाई जाती है तो

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

उनके अज्ञानता का विनाश होता हैं और परमात्मन् के मिलने के विश्वास की पुष्टि भी होती है। कैदी जीवात्मन् का सारा मोह तथा भ्रम नष्ट हो जाता है। जीवात्मन् सीता को विश्वास हो जाता है कि हनुमान गुरू या शिक्षक परमात्मन् का दूत बनकर उन्हें परमात्मन् के स्वरूप से परिचित तथा विश्वासित करा देता है। अंततः वह परमात्मन् से तादात्म्य स्थापित कर ही लेता है।

रामकथा का विश्व व्यापी प्रभाव सुदूर पूर्वी देशों की संस्कृति को भी प्रभावित किया है। उन दिनों में दक्षिण पूर्व के अधिकांश देशों में हिन्दू राजाओं का शासन हुआ करता था। यद्यपि अभी भी

थाईलैण्ड जैसे अनेक बौद्ध देश हैं, जहां भारतीय शासको का कभी न कभी शासन हुआ करता था। ये राज्य राम के नाम से सम्बन्धित रहे हैं। इण्डोनेशिया में जहां जनसंख्या बहुतायत में मुस्लिम हैं, उस देश में रामकथा बहुत ही मार्मिक ढ़ंग से खेला जाता है। इसी प्रकार बाली ,सुमात्रा,जावा, कम्बोडिया और बर्मा में भी रामकथा पूरे आम जनमानस में नाटकों ,मन्दिरों, तथा लोकगीतों के रूपमें जीवित है।

भारत के अलावा तीन और अयोध्या विश्व में स्थित होना माना जाता है। एक थाईलैण्ड में, एक कोरिया में तथा एक इण्डोनेशिया में है। इन हर देशों में रामकथा मूल कथा से हटकर किसी न किसी परिवर्धित रूपमें मिलती है। किसी किसी रूपान्तर मे सीता को रावण की बेटी बताया गया है। बाली का रामायण अपने साहित्यिक उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध माना जाता है।

रामकथा ने चीनी ,जापानी और कोरिया के निवासियों के जीवन शैली पर अपना अमिट प्रभाव छोड़ती है, विशेषकर राम का चरित्र – कथा का प्रमुख चरित्र या नायक होता है। जापानियों ने एक उत्कृष्ट कार्टून रूपान्तरण के माध्यम से राम के चरित्र को चित्रित किया है। आस्ट्रेलिया, पश्चिम एशिया, अनेक अरब तथा अफ्रीकी देशों में वहां के निवास करने वाले हिन्दुओं में रामायण जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग बन गया है।

दक्षिण अफ्रीका और मारिशस में लगभग एक डेढ शताब्दियों पूर्व आये हुए हिन्दुओं के जीवन में राम कथा विशेष रूप से जीवन का हिस्सा बनी हुई है। हिन्दू के घर को उसके सामने हनुमानजी मूर्ति तथा उसके पास गाड़े हुआ ध्वजा से पहचान होती है। वहां के सामाजिक सराकारों की पहचान विभिन्न प्रकार की शैली में राम की कथा के गायन से होता है। राम कथा से सम्बन्धित एक विशिष्ट कार्यक्रम वहां के रेडियो व टी वी कार्यक्रमोंमें निर्धारित किये जाते हैं।

अंग्रेज विद्वानों ने रामायण का अध्ययन करके उसके बारे में टिप्पणी भी किया है । यद्यपि कुछ पूर्ववर्ती अध्ययन गलत तथ्यों के खोजने के उद्देश्यों को लेकर इस प्रकार प्रारम्भ की गयी है कि अपने इसाई धर्म की सर्वोच्चता को ही सिद्ध कर सकें। सर वारेन हेस्टिग्ज जो भारत का प्रथम गवर्नर जनरल था, ने बहुत ही सम्मानित विचार व्यक्त किया है। उसने कहा है कि इसाई धर्म के नेता जो भारतीयों के जीवन तथा व्यवहार के बारे में प्रश्न उठाते हैं कि भारतीयों व सुसंस्कृत लोगों का रामायण बहुत ही का पूज्य व धार्मिक पुस्तक है। उन्होने लिखा है कि यह पुस्तक अभी भी भारत में तथा हिन्दुओं में वैसे ही महत्व की बनी होगी ,जबकि ब्रिटिस अधिकारी वहां से कब के निकल चुके होंगे। कई यूरोपीय विद्वानो ने बाल्मीकि रामायण को विशुद्ध साहित्यिक पुस्तकीय गुणों वाला कहकर अभिमत व्यक्त किया है।[7,8,9]

रामकथा मारीशस और दक्षिण अफ्रीकी देशों में गन्ने की खेती करने के लिए आये गिरमिटिया किसानों व श्रमिकों के साथ आया है। यह हिन्दुओं के एक अभिन्न अंग के रूप में अधिक से अधिक एक सौ पचास सालों से दक्षिण अमेरिकी देशों, सूरीनाम, गुयाना व त्रिनिदाद आदि देशों में आया है। इन वहादुर लोगों को उनके कठोर भाग्य ने इस विषम स्थिति में लाकर छोड़ रखा है। यद्यपि उन्हें एक विदेशी माहौल प्राप्त हो

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

सका है। फिर भी इनके लिए अच्छे आसार दिखाई पड़ रहे हैं। ये सब गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरित मानस का असर है जो मूल रामायण से भी अधिक लोकप्रिय, न केवल भारत में अपितु विश्व के हर क्षेत्रों में हुआ है। ये श्रमिक दिन में खेतों में कठिन श्रम करते हैं और रात में ढ़ोल-मंजीरे के साथ भगवान का भजन गाते व सुनाते हैं। उन्हें विश्वास था कि इस अध्ययन तथा श्रवण व गायन से भगवान श्रीराम उनके सारे पाप हर कर उन्हें समृद्धि, मुक्ति तथा मोक्ष का लाभ प्रदान करेंगे। इन्हें जहाज के माध्यम से विदेशों में लाया गया था। वे भी राम का नाम लेते तथा उनके चरण कमल को अपने दिल तथा स्मृति में सजोते थे। इन प्रार्थनाओं एवं भजनों से उनमें नव जागरण तथा स्फूर्ति का संचार होता था। वे लोहे की तरह मजबूत होते देखे गये हैं। वे इससे और कठिन काम करने के लिए तत्पर हो जाते थे।

उत्तर और मध्य अमेरिका में तो राम कथा का प्रभाव अपेक्षाकृत बाद का है। कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका ,मैक्सिको और मध्य अमेरिका में हजारों की संख्या में हिन्दू पहले से ही रह रहे हैं। कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका में रामकथा को पुराने तथा युवा लोग बहुत पसन्द करते हैं। रामायण और रामनाम घरों तथा मन्दिरों में बखूबी बोली जाती है। विजय दशमी के त्योहार की तरह रामलीला मंन्दिरों तथा बड़े भीड़वाले वाह्य प्रांगणों में अभी भी खेली जाती है। विश्व व्यापी प्रभाव डालने के लिए बड़े-बड़े आयोजनों में विद्वानों का सम्मेलन तथा प्रवचन होते रहते हैं। राम कथा के अध्यात्मिक तथा साहित्यिक मूल्यों के पुर्नस्थापन के लिए अमेरिका के अनेक विश्वविद्यालयों में इसे पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है। इन देशों के अध्यात्मिक विद्वान गैर हिन्दू देश के भी होते हैं। रामकथा ने इन सभी के जीवन पद्धति में आमूल परिवर्तन ला दिया है।

निष्कर्ष

प्राचीनकाल से ही रामकथा जीवन में अमृत की रसधारा बरसा रहा है। इसे मूल रूप से भगवान शिव ने पार्वती जी को सुनाया था। इसके बाद काकभुशुण्डजी ने गरूणजी को सुनाया था। याज्ञवलक्य जी ने भारद्वाज मुनि को इस कथा का रसपान कराया था। इस कलिकाल में गोस्वामी तुलसी दास ने इसे आम लोकभाषा में सभी लोगों को अपने लेखनी के माध्यम से वितरित किया था। यद्यपि कलियुग में अनेक दोषारोपणों को रामायण में वर्णित किया गया है और कुछ लोगों के आलोचना का वह भाग भी बन जाता है। परन्तु तुलसीदास जी ने तो समाज के तत्कालीन स्थिति को जैसा देखा और अनुभव किया उसी भाव से वर्णित किया है । किसी के मान सम्मान पर आधात पहुचाना उनका कत्तई लक्ष्य नहीं था।

जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष और मुक्ति को एक व्यक्ति भक्ति तथा सच्चे समर्पण से प्राप्त कर सकता है। यद्यपि एसा कर पाना कोई आसान सा काम नहीं होता है ,परन्तु रामकथा में रूचि , साधना तथा भक्ति से इस लक्ष्य को आम आदमी आसानी से प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार रामकथा हिन्दू संस्कृति का पर्याय बन गया है। हम बड़े अधिकार के साथ कह सकते हैं कि जहां-जहां हिन्दू हैं वहां रामकथा अवश्यम्भावी रूप से मिलता ही है।[9]

संदर्भ

1. वाल्मीकि रामायण, ४.४०, ३०-३१
2. Chatterjee, B.R., History of Indonesia, P.123
3. वाल्मीकि रामायण, ४.४०, ३३-४९
4. Das, N.C., Notes on Ancient Geography of Asia compiled from Valmiki Ramayan, P.71
5. वाल्मीकि रामायण, ४०-४०, ५०-६०
6. Das, N.C., op. cit. P.78

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

7. Das, N.C., op. cit. P.79
8. वाल्मीकि रामायण, ४.४३, ३५-५४
9. वाल्मीकि रामायण, ४-४३.५५

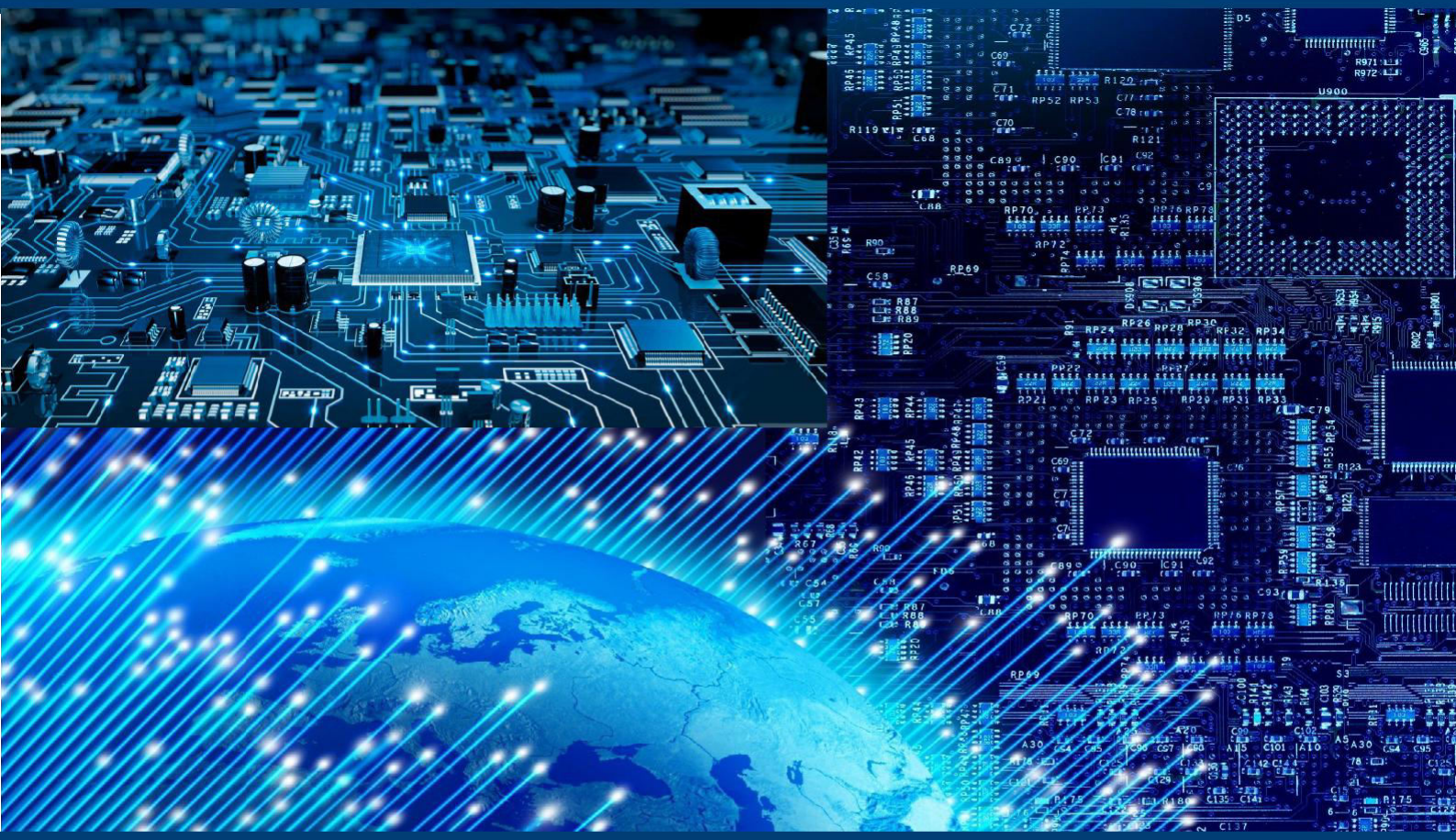

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |